रस-सिद्धान्त Contd.

(11) स्मृति –
संस्कार – पूर्वानुभूतार्थविषयिणी काचि चित्तस्यावस्था –
सदृशज्ञान चिन्तार्थैरस्या उत्पत्ति – पूर्व में अनुभूत विषयों
से चित्त की अवस्था, सदृशज्ञान चिन्ता आदि से
इसकी उत्पत्ति होती है।

(12) धृतिः – अभीष्ट की कामना से प्राप्त स्पृहा की
पर्याप्तता। ज्ञानशक्ति आदि इसकी उत्पत्ति हैं।

(13) व्रीडा – चित्तसंकोचात्मिका लज्जा – चित्त को संकुचित
करने वाली लज्जा।

(14) चपलता – चित्त की वाक्पटुता की अवस्था।

(15) हर्ष – इष्ट की प्राप्ति होने पर मन की प्रसन्नता

(16) आवेग – अनर्थ की अतिशयता से उत्पन्न चित्त
में भ्रम की स्थिति।

(17) जड़ता – क्रियाओं को संपन्न करने की अनिपुणता।

(18) गर्व - मद

(19) विषाद – कार्यसिद्धि न होने का दुःख।

(20) औत्सुक्यम् - प्रिय से मिलने की जल्दी।

(21) निद्रा – श्रमादि से इन्द्रियों के कार्य करने में
विमुखता, मन का एक न होना।

(22) अपस्मारः – ग्रहविशादि से उत्पन्न मन का
क्षिप्त होना।

Scanned with CamScanner

(23) सुप्तम् — निद्रा में जाकर, विषयों का अनुभव।

(24) प्रबोधः — निद्रा से निकलकर बाहर आ जाना।

(25) अमर्ष — स्वेद (पसीना), शिर काँपना, नेत्र लाल होना आदि इन्द्रियों की विकृति से इसकी उत्पत्ति होती है।

(26) अवहित्थम् — लज्जा, हर्ष आदि की गोपनीयता।

(27) मति — शास्त्रादि के उपदेश के निर्धारण की बुद्धि।

(28) उग्रता —

(29) व्याधि — दुःखादि से मनस्ताप।

(30) उन्माद — उत्कण्ठा हर्ष शोक सन्निपात ग्रहादि से उत्पन्न दोष।

(31) मरणम् — सम्मोह इन्द्रिय से जुड़े हुए शरीर का विक्षेपण।

(32) त्रास — गर्जनादि से उत्पन्न भय का क्षोभ।

(33) वितर्क — सन्देह से उत्पन्न व्यापार का जनक।

Contd.

Uma Pathak
Deptt. of Skt.
[illegible]